दिल्ली। दिवंगत डॉ. ए.पी.जी. अब्दुल कलाम,पूर्व राष्ट्रपति,भारत को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए ब्र.कु. मृत्युंजय,एक्ज़ीक्युटिव सेक्रेट्री,ब्रह्माकुमारीज़।

गुड़गांव-से.17ए.। स्वच्छ भारत अभियान के तहत स्वच्छता कार्यक्रम में भाग लेते हुए ब्र.कु. ज्योति व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रीना, यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. डी.डी.एस.संधु व यूनिवर्सिटी के एम्प्लॉइज़।

पालम विहार-गुड़गांव। सशक्त नींव प्रोजेक्ट के अंतर्गत पुलिस कमिश्नर ऑफिस में प्रेस कॉन्फ्रेन्स के पश्चात् समूह चित्र में बायें से दायें ब्र.कु. नितिमा,फ्री लान्स राइटर, डॉ. अवधेष शर्मा,कंसल्टेंट साईकाट्रिस्ट, दिलीप भाई,कॉलम राइटर,टाइम्स ऑफ इंडिया, ब्र.कु. उर्मिल, नवदीप सिंह विर्क,पुलिस कमिश्नर, ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. वीरेन्द्र,चार्टर्ड एकाउंटेंट व राजेश छेची,ए.सी.पी. क्राईम।

फोरबेसगंज-बिहार। बाइसवें जैन तेरापंथ तीर्थंकर जैनमुनी आचार्य महाश्रमण जी के आगमन पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु. रुकमा व अन्य भाई बहनें।

सम्बलपुर-ओडिशा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् विधायक नागेन्द्र प्रधान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती। साथ हैं समय न्यूज़पेपर के एडीटर प्रफुल्ल दास व अन्य।

पवित्रता के प्रतीक हैं मोर 'मुकुटधारी'

श्रीकृष्ण का आह्वान करने के लिए पहले तो इस भारत के वासियों के आहार-व्यवहार-विचार के शुद्धिकरण की आवश्यकता है। आज तो भारत में घर-घर में 'काम' बसता है, सभी के मन में 'दाम' बसता है। श्री कृष्ण को पधारने के लिए तो कोई जगह ही खाली नहीं है, तब एक नगर के दो राजा कैसे हो सकते हैं? देखा जाता है कि 'सन्यासी' और 'महात्मा' लोग अपनी साधना अथवा पुरुषार्थ से पवित्रता को प्राप्त करते हैं। वे जन्म से ही महात्मा नहीं होते हैं। जब से महात्मा बनते हैं, तभी उनके चित्रों में उनके सिर के पीछे प्रकाश का ताज (प्रभामण्डल) अंकित किया जाता है।

भारत वर्ष के अंदर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव को बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। `कृष्ण' नाम लेते ही अपने सामने हाथों में अथवा होठों पर मुरली धारण किये हुए मोर-मुकुटधारी एक दिव्य मूर्ति की झलक दिखाई देती है। हर एक माता अपने बच्चे को नयनों का तारा और दिल का दुलारा समझती है, फिर भी वह श्रीकृष्ण के बचपन के रूप को देखने की चेष्टा करती है। भक्तगण भी श्रीकृष्ण को `सुंदर',`मन-मोहन', `चित्तचोर', `मुरली मनोहर' इत्यादि नामों से याद करते हैं। वास्तव में श्रीकृष्ण का सौन्दर्य चित्त को चुरा ही लेता है। जन्माष्टमी के दिन जिस बच्चे को मोर-मुकुट पहनाकर, मुरली हाथ में देते हैं उस समय हम सभी का मन उस बच्चे के नाम, रूप, देश, काल को भूलकर कुछ क्षणों के लिए श्रीकृष्ण की ओर आकर्षित हो जाता है। सुंदरता तो आज भी बहुत लोगों में पाई जाती है, परंतु श्रीकृष्णसर्वांग सुंदर थे,

सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम थे। ऐसे अनुपम सौन्दर्य तथा गुणों के कारण ही श्रीकृष्ण की पत्थर की मूर्ति भी चित्तचोर बन जाती है। होठों पर सदा मुस्कान रहती और नयनों में सदा शान्ति छलकती है इसलिए कृष्ण को `नयनाभिराम' भी कहते हैं।

जन्माष्टमी के दिन श्रीकृष्ण के भक्त, उनके चरित्र के आधार पर झांकियां तैयार करते और रथ आदि सजाकर उन झांकियों को पूरे नगर में घुमाते हैं, परंतु यह नहीं सोचते कि श्रीकृष्ण का जीवन झांकियों के योग्य बना किस आधार पर? झांकियों को देखने के बाद हमें अपने जीवन में भी झांकना चाहिए कि जिस श्रीकृष्ण का हम आह्वान करते हैं, उनके समान हमने आने वाले जीवन में कहां तक श्रेष्ठता को लाया है? अतः श्रीकृष्ण - शेष पेज 11 पर...

माहौल के अनुरूप खुद को स्ट्राँग बनायें...

प्रश्नः- परीक्षा के समय नॉर्मल रहने के लाख उपाय किये जायें, लेकिन अंदर से बच्चे नॉर्मल नहीं होते हैं ना!

उत्तरः- अंदर जब नॉर्मल होंगे तब तो बाहर भी नॉर्मल अनुभव करेंगे। लेकिन हमने ही परीक्षा को इतना बड़ा बना दिया कि जिससे स्ट्रेस पैदा हो रहा है। पहले तो साल में एक बार परीक्षा होती थी। लेकिन अब परीक्षा का समय बढ़ता जा रहा है। अब कुछ सप्ताहिक टेस्ट होते हैं, फिर महीने भर का टेस्ट होता है, तो इस तरह से बच्चे का पूरा साल कैसा बीत रहा है, जैसे कि उसके अंदर एक बहुत बड़ा दबाव कार्य कर रहा हो। यह बच्चे के दिमाग के लिए बहुत ही नुकसानदायक होता है। वो बचपन के दिन जो हमारे लिए सबसे सुनहरा समय होता था, आज वही बच्चे उस अवस्था में कहते हैं कि मुझे बहुत स्ट्रेस है। अगर आप देखो कि जो बच्चे स्कूल में दाखिला के लिए जाते हैं तो उनको कितना स्ट्रेस से गुज़रना पड़ता है। तीन साल का एक बच्चा स्कूल में दाखिले के लिए साक्षात्कार देने जा रहा है। उसको माता-पिता बहुत दबाव दे रहे हैं क्योंकि माता-पिता बहुत ज़्यादा तनाव में हैं कि अगर उस स्कूल में उसको दाखिला नहीं मिला तो! ये जो भय पैदा हो रहा है यह हम बच्चे को उस आयु में ही उसके मन में डर की भावना बिठा देते हैं कि ये बहुत महत्वपूर्ण है, अगर नामांकन नहीं हुआ तो समझ लो तुम असफल हो जाओगे।

प्रश्नः- माता-पिता तो यही कहेंगे कि सारे स्कूल ऐसे हो गये हैं, शिक्षा का पूरा माहौल ही ऐसा हो गया है। अगर हम बच्चे को नहीं डांटे, उसे नहीं समझायें, उस पर दबाव नहीं डालें तो उसका उस स्कूल में नामांकन ही नहीं होगा।

ब्र. कु. शिवानी

उत्तरः- उसके लिए हमें क्या-क्या करना होगा, हमें पढ़ाना होगा, बहुत अच्छी तरह से तैयारी करानी होगी, उसके आत्मविश्वास को बढ़ाना होगा, सिर्फ हमें एक चीज़ नहीं करना होगा, उसके मन में डर पैदा नहीं करना होगा। सार में हम यही कह सकते हैं कि जो माहौल है, हमें उस माहौल के अनुरूप अपने आपको स्ट्राँग बनाना होगा। `स्ट्रेस' शब्द का हम दिन भर में कितना उपयोग करते हैं। अगर हम विज्ञान में स्ट्रेस शब्द को लें तो स्ट्रेस इज़ इक्वल टू प्रेशर डिवाइडेड बाई रेजिलेंस। बाहर प्रेशर तो पहले से ही है, स्कूल में इंटरव्यू के लिए गये, फिर मेरे माता-पिता गये नामांकन कराके वापस आ गये, कहा कि यह शहर के सबसे बढ़िया स्कूलों में से एक है और कहा, आपका नामांकन हो गया है और आपको अब स्कूल जाना है।

आज वो छोटे-छोटे बच्चे पता नहीं कितनी मेहनत से गुज़रते हैं। ठीक है दबाव बदल रहा है। हम बैठकर उसके बारे में शिकायत नहीं कर सकते। लेकिन जितना दबाव न्यूमेरेटर है ना बढ़ता जा रहा है। डिनोमिनेटर रेजिलेंस इन अवर स्ट्रेंथ। उस दबाव को सहन करने की मेरी अपनी आंतरिक शक्ति मेटल शीट्स होते हैं। इंडस्ट्रीज़ में जब हम जाते हैं तो अलग-अलग प्रकार के मेटल शीट्स होते हैं, हर मेटल शीट के ऊपर एक समान प्रेशर डाला जाता, लेकिन हर मेटल का स्ट्रेस फैक्टर अलग-अलग होता है क्योंकि उसकी इनर स्ट्रेंथ अलग-अलग है।

उसी तरह हममें से भी हरेक की अलग-अलग इनर स्ट्रेंथ है। दबाव हरेक के ऊपर एक समान है। लेकिन जिसकी जितनी इनर स्ट्रेंथ होगी, वो उस दबाव को उतनी अच्छी तरह से सहन कर पायेगा। आज क्या हो रहा है, दबाव तो बढ़ रहा है न्यूमेरेटर, डिनोमिनेटर पर ध्यान नहीं दे रहे हैं और भय क्रियेट करते जा रहे हैं। तो डिनोमिनेटर और घटता ही जा रहा है और न्यूमेरेटर बढ़ता जा रहा है डिनोमिनेटर घटता जा रहा है। स्ट्रेस का फैक्टर बढ़ता जा रहा है। क्योंकि परिवर्तन बहुत ही तीव्र गति से हो रहा है। जिसके कारण डिनोमिनेटर भी बहुत तीव्र गति से घटता जा रहा है और स्ट्रेस फैक्टर बहुत ही तीव्र गति से बढ़ता जाता है। और कभी-कभी तो वह हमारे कंट्रोल से बाहर ही चला जाता है। - क्रमशः